3. शेखचिल्ली का सपना

मेहनत करने के स्थान पर सपने देखते रहने वालों का क्या हाल होता है? आओ, इस कहानी को पढ़कर जानें।

हँसो और मज़े करो–

मालकिन – कल तुमने पौधों को पानी क्यों नहीं दिया?

नौकर – कल बारिश हो रही थी, इसलिए।

मालकिन – तो फिर छाता लगाकर दे देते।

पिता– एक साथ इतने केले मत खाओ।

बेटा– एक साथ कहाँ, एक-एक करके खा रहा हूँ।

एक दिन शेखचिल्ली की अम्मी ने उससे कहा, "बेटा! अब तुम बड़े हो गए हो। तुम्हें कुछ काम-धंधा करना चाहिए।" शेखचिल्ली बोला, "लेकिन मुझे तो कोई भी काम नहीं आता।" अम्मी बोलीं, "बेटा, कुछ न कुछ तो तुम्हें करना ही होगा।"

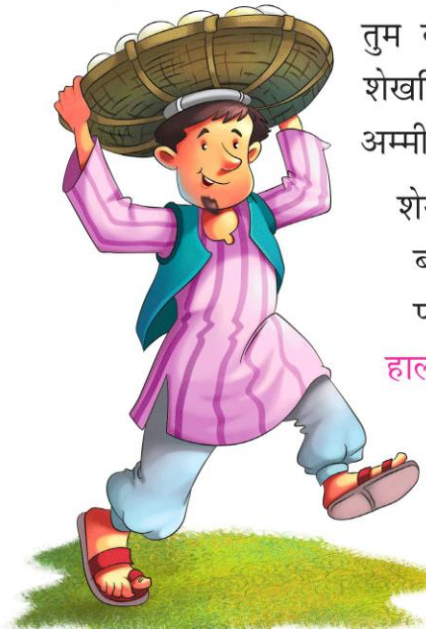

शेखचिल्ली मेहनत से नहीं घबराता था, मगर ख्याली पुलाव बहुत बनाता था। मस्ती में झूमता हुआ वह बाहर निकल पड़ा। रास्ते में एक सेठ अंडों का टोकरा पकड़े परेशान हालत में खड़ा था। उसने शेखचिल्ली को देखते ही कहा, "ऐ भाई! इस टोकरे को मेरे घर तक पहुँचा दोगे, तो तुम्हें दो अंडे दूँगा।"

शेखचिल्ली बोला, "सिर्फ़ दो अंडे!" सेठ ने कहा, "दो अंडों से तो इंसान की तकदीर बदल सकती है।" यह सुनते ही उसने अंडों का टोकरा सिर पर रखा और सेठ के पीछे-पीछे चलने लगा। वह मज़दूरी में मिलने वाले दो अंडों को लेकर तकदीर बदलने का सपना देखने लगा।

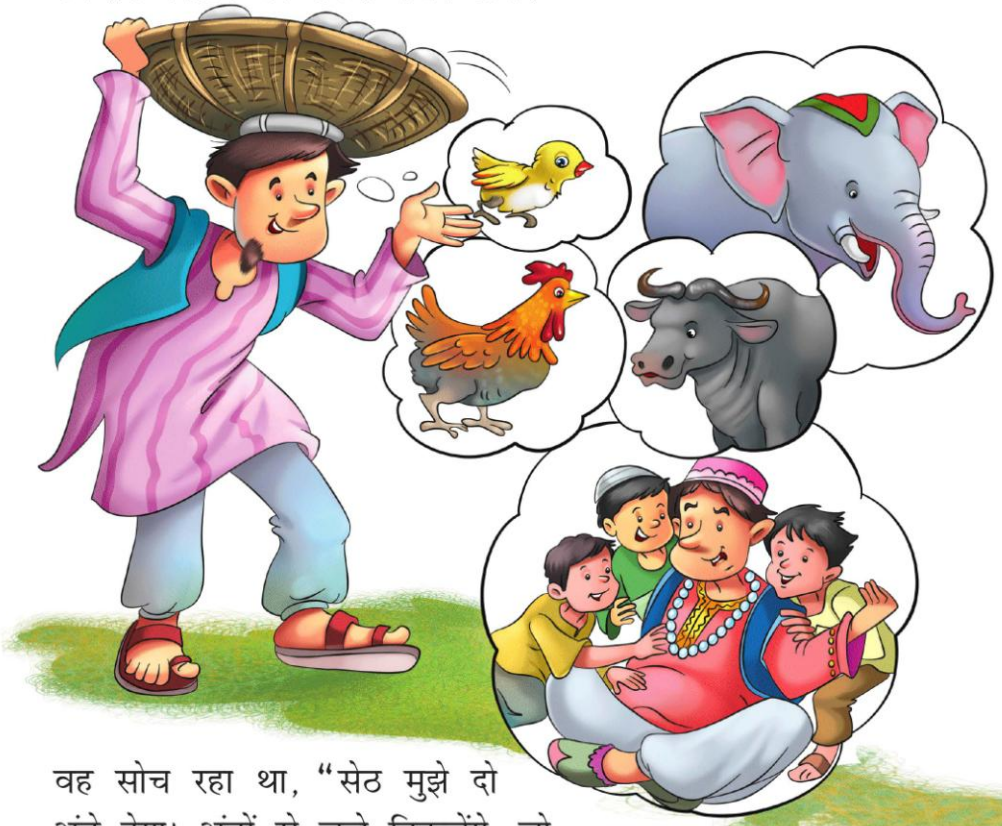

वह सोच रहा था, "सेठ मुझे दो अंडे देगा। अंडों से चूज़े निकलेंगे, जो बड़े होकर मुर्गे या मुर्गियाँ बनेंगे। मुर्गियाँ और अंडे देंगीं, जिनमें से और चूज़े निकलेंगे। इस तरह मेरा एक बड़ा मुर्गीघर बन जाएगा। कुछ समय बाद मैं सारी मुर्गियाँ बेचकर कई भैंसें खरीद लूँगा। इस तरह जल्दी ही मेरा दूध बेचने का व्यवसाय शुरू हो जाएगा। लोग मुझसे दूध खरीदने आएँगे और मैं अमीर बन जाऊँगा।"

"इसके बाद मैं अपनी सारी भैंसें बेचकर एक हाथी खरीदूँगा। लोगों को उसकी सवारी करवाऊँगा और पैसे इकट्ठे कर के एक और हाथी खरीदूँगा। फिर उनके बच्चे होंगे। धीरे-धीरे मेरे पास बहुत-से हाथी हो जाएँगे। उन्हें मैं राजाओं तथा महाराजाओं को बेचूँगा और खूब सारा धन कमाऊँगा।"

शेखचिल्ली का सपना अभी भी चल रहा था। उसने सोचा, "मैं हाथी बेचकर हीरे का व्यापार करुँगा और बहुत सारा पैसा कमाकर शानदार महल बनवाऊँगा। फिर मैं शादी कर लूँगा। फिर बच्चे होंगे। वे लाड़-प्यार में मेरे सिर पर चढ़ेंगे। जब ज़्यादा तंग करेंगे, तो मैं उन्हें यूँ झटक दिया करूँगा।"

यह सोचते हुए शेखचिल्ली ने अपने सिर पर रखे टोकरे को झटके से सामने फेंक दिया। सारे अंडे टूट गए। अंडों को टूटा हुआ देखकर तो उसका कलेजा मुँह को आ गया। सेठ ने पलटकर देखा और आग बबूला होते हुए बोला, "मूर्ख! यह क्या किया? सौ रुपये के अंडे तोड़ दिए।"

शेखचिल्ली रोते हुए बोला, "अरे सेठ जी! आपके तो सौ रुपये के अंडे ही टूटे हैं, लेकिन मुझ पर तो आसमान ही टूट पड़ा है। मेरा मुर्गीघर, दुग्धशाला, महल सब खत्म हो गए। मेरे बीबी-बच्चे, लाखों की ज़ायदाद सब चली गई।"

दो गधों का बोझ

पठन हेतु

एक बार बादशाह अकबर, उनका शहज़ादा तथा बीरबल प्रात:कालीन सैर पर गए।

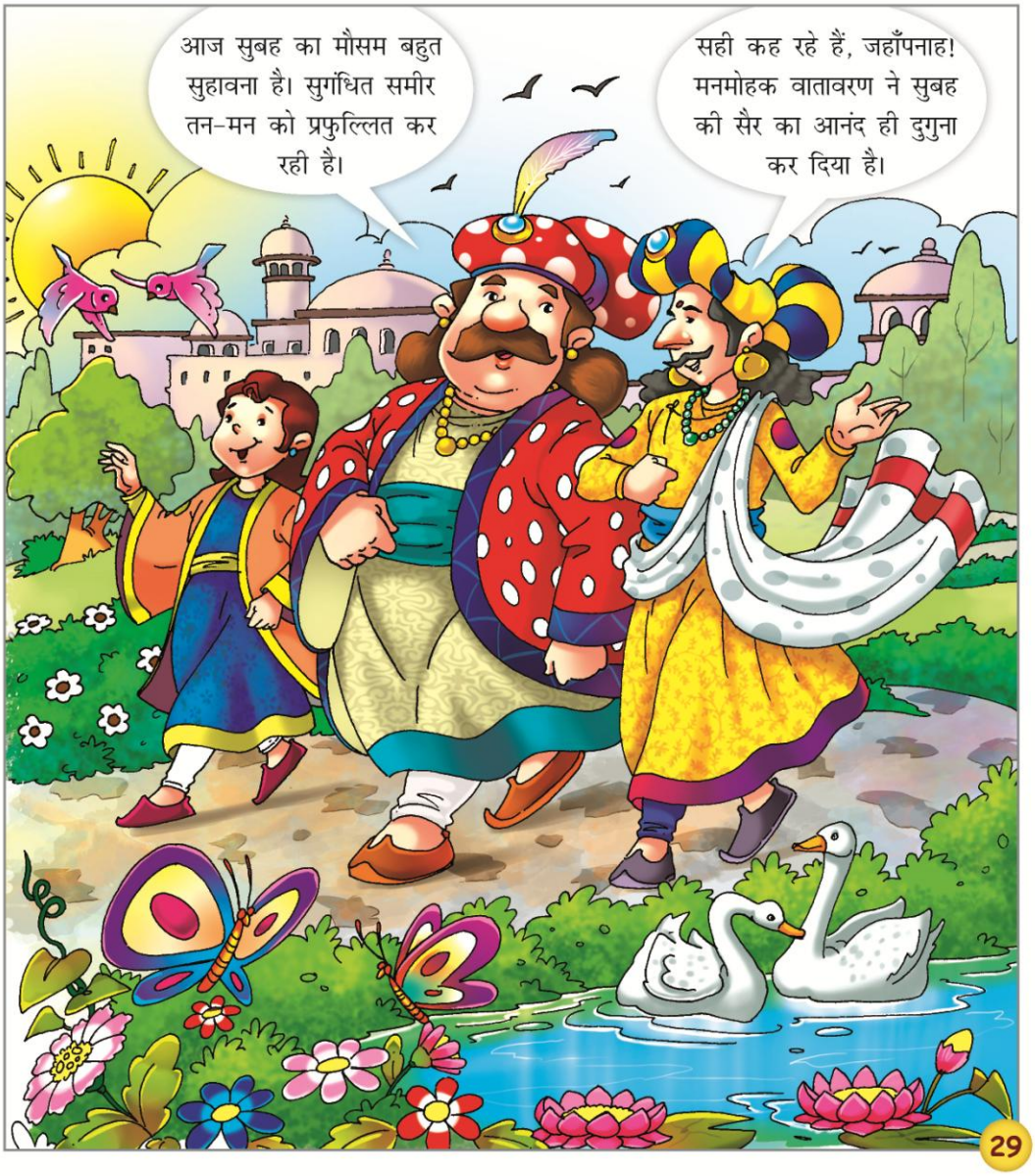

सुहावने मौसम के कारण वे चलते-चलते बहुत दूर निकल आए। अब तक सूरज की गर्मी काफ़ी बढ़ चुकी थी व धूप असहनीय हो गई थी।

बादशाह ने अपना लबादा उतारकर बीरबल के कंधे पर रख दिया और बोले–

शहजादे ने भी अपना लबादा उतारकर बीरबल के कंधे पर रख दिया और बोला–

चलते-चलते बादशाह की नज़र बीरबल पर पड़ी। उन्हें मज़ाक सूझा। वे बोले–

यह सुनकर पहले तो बादशाह और शहज़ादा झेंप गए और फिर वे खिल-खिलाकर हँसने लगे।